विश्व वेद सम्मलेन
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र
१५-१७ दिसंबर २०१७

विश्व वेद सम्मलेन के प्रमुख बिंदु :-

1. विश्व वेद सम्मलेन का उद्घाटन भारत के उप राष्ट्रपति वेंकैया नायडू के सम्बोधन से हुआ।
2. सम्मलेन में मुस्लिम स्नातिकाओं ने वेद मंत्रों के उच्चारण से यज्ञ में आहुतियाँ डाली।
3. सभी धर्मोचार्यो ने अपने- अपने धर्मों के मूल मे वेदों का ज्ञान बताया ।
4. अंतरराष्ट्रीय स्तर के विद्वानों ने आधुनिक विज्ञान के विकास में भी में भी वेदों के सहयोग का हवाला दिया।
5. इंडिया गेट के पास १ जनपथ पर चल रहा यह सम्मलेन तीन दिनों तक वेद मन्त्रों के उच्चारण से वातावरण में मानवता का सन्देश देता रहा।
6. १५ -१७ दिसंबर , कड़ाके के ठण्ड होने के बावजूद भी देश और विदेश से २५०० से भी ज्यादा महिलाओं और पुरूषों ने इस महासम्मेलन में भाग लिया। इतने सारे लोगों के खाने- पीने और रहने की व्यवस्था का सूंदर प्रबंध किया गया।
7. भारत के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी द्वारा जिस तरह पूरी दुनिया में योग की प्रतिष्ठा बढ़ाई गई उसी बुनियाद पर वेदों की गरिमा को प्रतिष्ठापित करने का शंखनाद करने की कामना इस सम्मलेन में की गई।
8. सम्मलेन के अंत में इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष ने अगले वर्ष फिर से और भी ज्यादा बड़े स्तर पर वेद सम्मलेन के आयोजन में सहयोग देने का आश्वासन दिया।

.

वेद नहीं सिर्फ एक विचार, आओ मिलकर बनाए इसे, विश्व जीवन का आधार।

वेद विश्व के सबसे पुरानी कृतियाँ हैं, जिन्हें संसार का आदिग्रंथ कहा जा सकता है। वेद शब्द का मूल अर्थ "ज्ञान" होता है। 'विश्व वेद सम्मलेन' का आयोजन १५-१७ दिसंबर २०१७ में इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र में किया गया, जिसमे देश विदेश के विभिन्य धर्माचार्यों एवं विद्वानों ने भाग लिया। इसका आयोजन विश्व सरकार की संकल्पना को साकार करने, संयुक्त राष्ट्र संघ को और मजबूत बनाने तथा वेद के ज्ञान से समाज की संकुचित मानसिकता को समाप्त करने के उद्देश्य से किया गया। इस सम्मेलन में वेदों के ज्ञान को विज्ञान से जोड़ने के लिए भी बल दिया गया। विश्व वेद सम्मेलन में उपस्थित धर्माचार्यों ने जाति एवं सांप्रदायिकता मुक्त समाज का आह्वान करते हुए कहा कि वेदों में ऊंच-नीच का भेदभाव, अमीर-गरीब की दूरी मिटाकर समतामूलक समाज बनाने की बात कही गई है, जो आज के समाज के लिए अति आवश्यक है।

सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने वेद मंत्रों का हवाला देते हुए कहा, ''यत्र विश्व भवेत्येक नीड़म।' जहां पूरा विश्व एक घोसला बना जाता है और वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा पूरी मानवता को और साथ ही समस्त पशु-पक्षी और प्राणी जगत को मित्र के दृष्टि से देखने का आह्वान करता है। वेद का ज्ञान मनुष्य मात्र के लिए है। वेदों में हमारी प्राचीन संस्कृति-सभ्यता, विचार एवं दर्शन की जड़े निहित हैं। वेदों में विश्व बंधुत्व की भावना विद्यमान है। परस्पर प्रेम, आपसी भाईचारा, विश्व कल्याण तथा विश्व मैत्री की भावना वेदों में विद्मान है। वेदों का प्रचार-प्रसार अधिक से अधिक हो जिससे पूरे विश्व में शांति, एकता, आपसी भाईचारा का संदेश फैले। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि वेद ज्ञान का स्रोत हैं। ये अर्थशास्त्र, समाज, शिक्षा और राजनीति के क्षेत्र में आधुनिक बनाने और उच्च नैतिक मानकों को बनाए रखने में हमारा मार्गदर्शन करते हैं। वैदिक दर्शन की बात करते हुए उपराष्ट्रपति बताते हैं, सत्य, अहिंसा, धैर्य, तपस्या और आध्यात्मिक उत्थान मानव जीवन के आधार हैं। वेद धार्मिक सौहार्द, समानता और राष्ट्र की प्रगति का संदेश देता है। ऋग्वेद की ऋचा का उद्धरण देते हुए उन्होंने कहा कि वेदों के अनुसार समाज में कोई भी व्यक्ति छोटा या बड़ा नहीं होता। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने संसार को 'वेदों की ओर लौटो' का संदेश दिया था, जिसे सुप्रसिद्ध चिंतक मैक्स मूलर ने अनुमोदित किया था। सुप्रसिद्ध दार्शनिक और नोबल पुरस्कार विजेता मौरिस माटरलिक ने कहा था कि 'वेद ही सभी ज्ञान का एकमात्र और अतुलनीय स्रोत है'।

विश्व वेद सम्मलेन का उद्घाटन करते हुए भारत के उप राष्टपति वेंकैया नायडू का सम्बोधन

राज्यसभा के उप-सभापति प्रो. पीजे. कुरियन ने अपने आवाहन में कहा की, ''वेदों का यह संदेश कि सारा संसार एक है, मुझे बहुत अच्छा लगता है"। वेदों में ईश्वर को एक बताया गया है, और मैं भी इस बात को स्वीकार करता हूं। वेदों में महिलाओं को बराबरी का दर्जा दिया गया है, यह बहुत ही उच्च विचार है। भारत सरकार भी इस दिशा में निरन्तर प्रयास कर रही है। महिलाओं को लोकसभा और राज्यसभा में 33 प्रतिशत आरक्षरण दिये जाने का विधेयक शीघ्र ही कानून का रूप लेगा।

सामाजिक कार्यकर्ता और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश कहते हैं, ''वेद मानव मात्र के कल्याण का सबसे बड़ा ग्रन्थ है। यूनेस्को ने ऋग्वेद को मानवता का प्रथम और विश्व का सबसे प्राचीन ग्रंथ माना है। समाज से अंधविश्वास, जातिवाद, सांप्रदायिकता, संकीर्ण सोच, नशा, मांसाहार और समाज में उपस्थित विषमताओं को समाप्त करने के लिए वेदों के अलावा कोई जरिया नहीं है। वेदों के ज्ञान को विश्व भर में फैलाने के अपने अथक परिश्रम में लगे स्वमी अग्निवेश ने कहा की वेद संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानता है। वेदों में कोई छोटा और बड़ा नहीं है। इसे हिंदुओं का धर्मग्रंथ बताने और धर्मशास्त्रों के साथ जुड़े अज्ञान, अंधविश्वास और पाखंड का खंडन करते हुए उन्होंने कहा कि, मनुस्मृति के हवाले स्त्रियों और शूद्रों के बारें में जो अपमानजनक बातें कही जाती हैं, वे मूल मनुस्मृति में नहीं हैं, इन्हें कालांतर में जोड़ा गया। विश्व वेद सम्मेलन के पहले स्वामी अग्निवेश ने काशी, दिल्ली और चण्डीगढ़ में प्रेस कांफ्रेंस करके असहमत लोगों को शास्त्रार्थ करने की चुनौती भी दी ।

आज भारत ही नहीं, समूचा विश्व धार्मिक एवं जातीय संकीर्णता, असहिष्णुता, आर्थिक गैर बराबरी, सांप्रदायिकता और आतंकवाद से त्रस्त है। समाज में लगातार नशा सेवन, मांसाहार और हिंसा में वृद्धि हो रही है। इसके साथ ही ऊंच-नीच का भेदभाव गहरा होता जा रहा है। सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन में बढ़ रही समस्याओं से निपटने के लिए पूरा विश्व भारत की तरफ आशा भरी निगाहों से देख रहा है। वेद मानवता के उत्थान का प्रथम संविधान है। वेदों की सार्वभौमिक मान्यताओं और आध्यात्मिक मूल्यों से वैश्विक हिंसा, नकारात्मकता, अंधविश्वास और पाखंड से निपटा जा सकता है। वेदों के ज्ञान से इस दिशा में सार्थक बदलाव किया जा सकता है।

सम्मेलन में संस्कृत के विद्वान डॉक्टर मोहम्मद हनीफ शास्त्री ने कहा, ''संयुक्त राष्ट्र का घोषणा पत्र, वैदिक शिक्षाओं से मिलता-जुलता है, क्योंकि वेद किसी जाति, किसी देश, किसी वर्ग विशेष की बात नहीं करता है, बल्कि मानव कल्याण की बात करता है"।

अमेरिका से आए विश्व संविधान व पार्लियामेंट एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉक्टर ग्लेन टी मार्टिन ने कहा राजनीतिक मंच से विश्व शांति की कामना की जाती है। ''वेद विश्व शांति एवं मानव कल्याणा की बात करता है, लेकिन हम प्रतिवर्ष 1700 बिलियन डॉलर हथियारों के निर्माण पर खर्च करके संसार को युद्ध की आग में झोंकने का प्रयास कर रहे हैं। यदि संसार से गरीबी हटानी है और सबको सुख-सुविधाएं देनी है तो हथियार-निर्माण में खर्च के एक तिहाई भाग के कटौती से ही दुनिया के सभी-लोगों का खान-पान, वस्त्र और रहने की सुविधा, सुनिश्चित की जा सकती है।

हैदराबाद से आए प्रो. विट्ठल रावव आर्य ने ऋग्वेद का 'मनुर्भव' वाक्य उद्धृत करके कहा कि वेद मानव मात्र के कल्याण की बात करता है न कि मजहब और सम्प्रदाय की। इसलिए वेद की बात मानकर हम सब एक-दूसरे से मित्रता के रूप में व्यवहार करें तो समाज सुखी हो सकता है। जब हम अपनी सुविधा

के साधानों का उपयोग करते समय उसके बनाने वाले का धर्म, जाति, मजहब नहीं पूछते तो फिर आध्यात्मिक चिन्तन के समय हम अपने-अपने मजहबों के संकीर्ण दायरे में क्यों सिकुड़ जाते हैं?

परमार्थ निकेतन के संचालक स्वामी चिदानन्द सरस्वती ने कहा, ''वेब से वेद की ओर बढ़ें, तभी विश्व कल्याण होगा"।

सुपर कंप्यूटर परम के जनक डॉक्टर विजय भटकर ने वेदों को आधुनिकतम विज्ञान की टेक्नोलॉजी से जोड़ते हुए कहा कि कैसे अध्यात्म के बगैर विज्ञान अधूरा रह जाता है। कंप्यूटर के क्षेत्र में आगे बढ़ना है तो बगैर वेदों के सहारे नहीं बढ़ा जा सकता।

'विभिन्न धर्मों का मूल स्रोत: वेद' विषय पर बोलते हुए मौलाना एक आर शाहीन कासमी ने वेदमंत्रो और कुरान की आयतों में तारतम्य बैठाते हुए कहा कि वेदों से उन्हें बहुत प्रेरणा मिली है।

पूर्व केंद्रीय मंत्री आरिफ मुहम्मद खां ने वेदों को कुरान के शब्दों में ज़ब्बरूल अव्वलीन का दर्जा दिया।

जैन संत विवेक मुनि ने जैन सूत्रों से और सरदार देवेंद्र सिंह साहनी ने गुरूग्रन्थ साहब से वेदों का हवाला देकर वेदों की गरिमा को सर्वधर्म की बुनियाद के रूप में प्रतिष्ठत किया।

विचार-विमर्श के बाद विभिन्न धर्मों के धर्माचार्य और विद्वान इस निष्कर्ष पर पहंचे कि वेद मानवता के उत्थान का प्रथम संविधान है। वेद एक ईश्वर, एक सृष्टि और एक मानव की परिकल्पना को सिद्ध करता है। इसलिए आज की धार्मिक और सामाजिक संकीर्णता से निपटने में वेदों की शिक्षा न केवल सहायक है, अपितु वेदों में संपूर्ण वैश्विक समस्याओं का निदान भी है।

'विश्व वेद सम्मलेन': स्वामी अग्निवेश से एक भेंट

"विश्व शांति का संदेश देना हमारा मकसद"-: स्वामी अग्निवेश

प्रश्न: विश्व वेद सम्मेलन का उद्देश्य क्या था?

उत्तर: वेद सम्मेलन के पहला उद्देश्य विश्व शांति का संदेश देना था। हम समाज से धार्मिक एवं सामाजिक संकीर्णता, अंधविश्वास, पाखंड और नशा का समाप्त करने के लिए लंबे समय से संघर्ष कर रहे हैं। देश में व्याप्त जातिवाद, सांप्रदायिकता, असहिष्णुता, गैर बराबरी और वैश्विक हिंसा के समाधान में वेदों के महत्व को बताना था।

प्रश्न: विश्व वेद सम्मेलन में क्या आर्य समाज की दशा-दिशा पर भी विचार किया गया?

उत्तर: आर्य समाज के प्रभाव में निरंतर आ रही कमी पर चिंता व्यकत की गई। आर्य समाज का उदय पाखंड और अंधविश्वास के खिलाफ हुआ था और हम अलग ही संप्रदाय बना बैठे। इसकी आलोचना हुई। आर्य समाज का मतलब जाति विहीन समाज है। आर्य समाज का नया रूप विश्व वैदिक समाज होगा।

प्रश्न: दिल्ली के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में आयोजित विश्व वेद सम्मेलन क्या पहला विश्व वेद सम्मेलन था?

उत्तर: विश्व वेद सम्मेलन पहला वेद सम्मेलन नहीं था बल्कि अपनी तरह का यह पहला आयोजन था। इसमें देश के लगभग सभी धर्मों के धर्माचार्य और कई देशों के विद्वान शामिल हुए। इसके पहले आर्य समाज वेद सम्मेलन आयोजित करता रहा है उन सम्मेलनों में विद्वान आपस में चर्चा करते थे जो वेद पाठ के बाद समाप्त हो जाता था। विश्व वेद सम्मेलन में पहली बार तीन दिनों तक विभिन्न धर्मों के धर्माचार्यों और विद्वानों ने सामाजिक-धार्मिक विषयों पर गहन विचार-विमर्श एवं शास्त्रार्थ किया। भारत के साथ ही वैश्विक समस्याओं पर भी विचार हुआ। उसके समाधान पर चर्चा हुई। वेद के वसुधैव कुटुबंकम की भावना, एक ईश्वर, एक संसार, एक मानव परिवार और एक विश्व सरकार बनाने का संदेश दिया गया। सम्मेलन में दक्षिण अफ्रीका, कीनिया, हालैंड, जर्मनी के विद्वानों ने भाग लिया। मॉरिशस के सेंट्रल टेक्नोलाजी अकादमी के चेयरमैन डॉक्टर. सुदर्शन जगेसर आए थे। अमेरिका के वर्जीनिया स्थित रेडफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रो. डॉक्टर ग्लेन मार्टिन की उपस्थिति सराहनीय रही। वेदों का संदेश प्रसारित करने में हम काफी हद तक कामयाब हुए हैं। पहली बार हमने धर्म एवं अध्यात्म को सामाजिक न्याय से जोड़ा। वेद के ज्ञान को विज्ञान से जोड़ा। नर-नारी समता, नशामुक्ति, हिंसामुक्ति, पशुवध, अंधविश्वास, पाखंड एवं संकीर्णता के खिलाफ आवाज उठाई।

प्रश्न: मनुस्मृति को कुछ लोग अच्छी दृष्टि से नहीं देखते। क्या अब मनुस्मृति के बारे में भ्रम समाप्त हो जाएगा?

उत्तर: देखिए, मतभेद और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सम्मान होना चाहिए। डॉक्टर अम्बेडकर ने मनुस्मृति को जलाने की बात गलत कही थी। पुस्तक जलाना गलत है। दूसरी पुस्तक लिखकर इसका खंडन करना चाहिए। समाज में सवाल, असहमति और संवाद के लिए जगह होनी चाहिए। किसी चीज से आपका मतभेद हो तो संवाद से उसका समाधान होना चाहिए। पाबंदी या किसी ग्रंथ को जलाने से समाधान नहीं निकलेगा। इसलिए मैं कहता हूं कि मनुस्मृति को जलाने और पद्मावती पर पाबंदी की मांग करना गलत है। ऐसे किसी भी विवाद का समाधान संवाद से होना चाहिए।

प्रश्न: मनुस्मृति में स्त्रियों और शुद्रों के बारे में जो अपमानजनक बातें कही गई हैं, आप कहते हैं कि वो मनुस्मृति का अंग नहीं है?

उत्तर: हां! मनुस्मृति के हवाले से स्त्रियों और शुद्रों से संबंधित जो बाते कही जाती हैं वो मूल मनुस्मृति में नहीं हैं। उसे मूल ग्रंथ में बाद में जोड़ा गया। काशी, दिल्ली और चंडीगढ़ में हमने प्रेस कांफ्रेंस करके इस बात की चुनौती दी थी कि जिसको इस पर ऐतराज हो, वह आकर हमसे शास्त्रार्थ करे। मनुस्मृति की रचना के काफी दिनों बाद स्वार्थी तत्वों ने उसे मूल ग्रंथ में जोड़ दिया। आश्चर्य की बात यह कि जिस तरह की भाषा, शैली और व्यंजना का उपयोग मूल ग्रंथ में किया गया है, उसी शैली में नकलचियों ने उसमें गलत बात जोड़ी। वेद सम्मेलन में भी कोई हमारी बात का खंडन करने नहीं आया। इसका अर्थ यही हुआ कि हमारी बात सही है। चूंकि हमने पूर्व में घोषणा की थी कि मनुस्मृति पर हम विश्व वेद सम्मेलन में चर्चा करेंगे। इसलिए इस पर चर्चा हुई। डॉक्टर विजय करण ने मनुस्मृति का पूर्व पक्ष रखा। डॉक्टर सूर्यादेवी चतुर्वेदी ने इसका जवाब दिया।

सम्मलेन की यादें, चित्रों के माध्यम से :-

भारत के उप राष्ट्रपति वेंकैया नायडू वेदों और प्रक्षिप्तरहित मनुस्मृति का विमोचन करते हुए.

देश विद्वान और धर्माचार्य आये से विदेश-

सर्वधर्म समभाव का अनूठा उदहारण –मुस्लिम लड़कियाँ मंत्रोच्चारण करती हुई और अलग के धर्मों अलग– हुए। लेते भाग में सम्मलेन वेद साथ एक लोग

देश और विदेश के महिला और पुरूष महासम्मेलन में भाग लेते हुए